ISSN -: 2456-3579
Vol. 6 No.1 Varsh Pratipada
Vikram Samvat 2078, Year 2021
Special Issue-1

WRITERS VIEW

राइटर्स व्यू

आजादी @75

Managing Editor
Dr. Shachindra Mohan

Editor
Dr. Ajay Kumar Singh
Dr.Subodh Kumar Mishra

WRITERS VIEW

An Interdisciplinary, bilingual, bi-annual, a peer review or refereed, Indexed & Open Accesses International Research Journal

Vol. 6 No.1 Vash Pratipada ***Vikram Samvat 2078, Year 2021***

Content

क्रम	शोध पत्र, लेखक	पृष्ठ सं.
1	आजादी का अमृत महोत्सव के उद्घाटन पर प्रधानमंत्री का संबोधन	1-10
2	महामना का राष्ट्र चिन्तन डॉ. बालमुकुन्द पाण्डेय	11-20
3	चौरी-चौरा : एक पुनरावलोकन प्रो. हिमांशु चतुर्वेदी	21-25
4	बाबा राघव दास एवं चौरी-चौरा प्रो. निधि चतुर्वेदी	26-32
5	पं. दीनदयाल उपाध्याय : परम्परा और संस्कृति डॉ. अनुपम सिंह	33-39
6	**Understanding India's Constitutional Development: From British Enactments to Post-independence** **Dr. Alok Kumar Yadav & Jivesh Jha**	40-54
7	भारत विभाजन के पश्चात सांप्रदायिक समस्याए और सरदार पटेल : एक ऐतिहासिक अध्ययन प्रोफेसर प्रवीन कुमार मिश्रा & अभिषेक कुमार तिवारी	55-63
8	**Sri Aurobindo : The Visionary of the Cultural Nationalism through Spiritual and Revolutionary Path** **Dr. Rajesh Kumar Nayak**	64-73
9	स्वराज्य के ७५ वर्ष और हिन्दुस्तानी राष्ट्र-गौरव का संघर्ष डॉ. संतोष कुमार 'अनल'	74-84
10	तुलसीपुर की लक्ष्मीबाई - वीरांगना रानी ईश्वरी देवी डॉ. वन्दना गुप्ता	85-93
11	भारतीय सांस्कृतिक राष्ट्रवाद व क्रांतिदृष्टा : भगिनी निवेदिता डॉ. स्नेहा पाण्डेय	94-102
12	हिंदी नेवर, इंग्लिश इवर रवि कुमार झा	103-111
13	सुभद्रा कुमारी चौहान और महादेवी वर्मा की कविताओं में राष्ट्रीय स्वाधीनता एवं जागृति का स्वर डॉ. सोनम सिंह	112-121
14	**India's Ecological Evolution Since Independence in The Field of Biotechnology** **Kritika Rao and Shivangi Rao**	122-140

WRITERS VIEW
Vol. 6 No. 1 Varsh Pratipada, Vikram Samvat 2077 Year 2021

ISSN-: 2456-3579

भारत विभाजन के पश्चात सांप्रदायिक समस्याए और सरदार पटेल : एक ऐतिहासिक अध्ययन

प्रोफेसर प्रवीन कुमार मिश्रा* अभिषेक कुमार तिवारी**

शोध सारांश

भारत में लगभग 200 वर्षों से चली आ रही क्रूर ब्रिटिश राज्य का समापन अन्यायपूर्ण प्रक्रिया के तहत भारत के सांप्रदायिक विभाजन के साथ हुआ। अंग्रेजों की दासता से मुक्ति और आपसी विभाजन के बाद, स्वतंत्र भारत को अपने आधुनिक स्वरूप के निर्माण में कई प्रकार की समस्याओं से होकर गुजरना पड़ा। इन समस्याओं में से सबसे बड़ी समस्या संप्रदायिकता की थी, जो भारत के धर्म आधारित विभाजन के कारण उस समय अपने चरम पर थी। इस अशांति और विक्षोभ के वातावरण से सरदार बल्लभभाई पटेल ने भारत को बाहर निकालकर, भारत राष्ट्र के निर्माण का अद्वितीय कार्य किया। शायद सरदार पटेल ना होते तो भारत का स्वरूप भी आज वह ना होता, जो वह है। भारत विभाजन के पश्चात उत्पन्न सांप्रदायिक समस्याओं (विशेषतः भारतीय मुसलमानों के संदर्भ में) को पक्षपात रहित तथा निस्वार्थ भाव से हल करने का प्रयास किया, इसके बावजूद तथाकथित छद्म धर्मनिरपेक्षतावादियों तथा कई राजनीतिक वर्ग विशेषकर सोशलिस्ट और कम्युनिस्ट नेतृत्व उन पर खुलेआम सांप्रदायिक तथा हिंदू समर्थक होने के आरोप लगाता है। प्रस्तुत शोध पत्र में भारत के विभाजन के बाद उत्पन्न सांप्रदायिक समस्याओं के समाधान के लिए सरदार पटेल द्वारा किया गया कार्य तथा भारतीय मुसलमानों के प्रति सरदार पटेल के दृष्टिकोण का समीक्षा करने का प्रयास किया गया है।

बीज शब्द:
विभाजन, संप्रदायिकता, धर्मनिरपेक्षतावाद, शरणार्थी, दंगे

* प्रोफेसर प्रवीन कुमार मिश्रा, विभागाध्यक्ष , इतिहास विभाग, गुरुघासीदास विश्वविद्यालय , बिलासपुर (छत्तीसगढ़)

** अभिषेक कुमार तिवारी, सहायक आचार्य(तदर्थ), इतिहास विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर